OCTOBER TO DECEMBER 2017-18

आगामी तीन माह की प्रस्तावित गतिविधियाँ

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	चना	जे.जी. 14	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
2.	गेहूं	G.W. 366	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
3.	चना	जे.जी. 14	सिड कम फर्टिलाइजर ड्रिल से कतार बोवाई का प्रदर्शन	5.0	12
4.	गेहूं	G.W. 366	सिड कम फर्टिलाइजर ड्रिल से कतार बोवाई का प्रदर्शन	5.0	12
5.	गन्ना	co- 86032	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
6.	गन्ना	co- 86032	लाल सड़न रोग प्रबंधन का प्रदर्शन	5.0	12
7.	मशरूम		मशरूम उत्पादन का प्रदर्शन		
8.	मछली		मछली सह बतख पालन का प्रदर्शन	1.0	06
9.	मछली		मिश्रित मछली पालन का प्रदर्शन	1.0	06
10.	मछली		ग्रास कार्प मछली के बढवार का प्रदर्शन	1.0	06
योग				33	90

प्रक्षेत्र परीक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	अरहर	आशा	रबी अरहर का आकलन	1.0	05
2.	चना	जे.जी. 14	चने की कतार बोनी हेतु ब्राड बेड का आकलन	1.0	05
3.	चना	जे.जी. 14	चने की कालर रॉट रोग प्रबंधन हेतु ट्राइकोडर्मा विरडी का आकलन	0.8	04
4.	टमाटर		टमाटर के झुलसा रोग प्रबंधन का आकलन	0.8	04
5.	धान + गन्ना		फसल अवशेषो के अपघटन हेतु ट्राइकोडर्मा के प्रयोग का आकलन	0.8	04
6.	गेहूं	G.W. 366	स्वचलित रीपर द्वारा गेहूं कटाई का आकलन	0.8	04
7.	मछली		नर्सरी तालाब में मत्स्य बीज (जीरा से फ्राई) उत्पादन का आकलन	0.5	04
8.	मछली		नर्सरी तालाब में मत्स्य बीज (फ्राई से अंगुलिका) उत्पादन का आकलन	0.5	04
9.	मछली		जलीय किड़े के विनाश पश्चात् मत्स्य बीज उत्पादन नर्सरी तालाब बीज (जीरा से फ्राई) उत्पादन का आकलन	0.5	04
योग				6.7	38

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	90
2.	पौध संरक्षण	4	1	80
3.	मत्स्यकी	4	1	85
4.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	82
योग		16	4	337

प्रक्षेत्र मे गन्ना बीज उत्पादन कार्यक्रम

क्र.	फसल	किस्म	बीज की श्रेणी	रकबा (हे.)
1.	गन्ना	co- 86032	आधार	0.4
2.	गन्ना	co-94008	आधार	0.4
3.	गन्ना	coc-671	आधार	0.4
4.	गन्ना	co-99004	आधार	0.4
5.	गन्ना	co-85004	आधार	0.4
योग				2.0

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिक का खेतो में भ्रमण	10	60
केन्द्र पर कृषको का भ्रमण	100	100
योग	110	160

बीजोत्पादन कार्यक्रम रबी -17-18

क्र.	फसल	किस्म	बीज की श्रेणी	रकबा (हे.)
1.	चना	जे.जी. 14	प्रमाणित	3.0
2.	अरहर	राजीवलोचन	आधार	2.0
3.	मुंग	पैरीमुंग	प्रजनक	1.0
4.	तिवड़ा	महातिवड़ा	प्रजनक	2.0
योग				8.0

समूह प्रदर्शन

क्र.	फसल	किस्म	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	चना	जे.जी. 14	50	125
2.	सरसो	पुसा विजय	15	37
3.	अलसी	RLC-92	15	38
योग			80	200

सीड हब योजनान्तर्गत बीजोत्पादन कार्यक्रम -17-18

क्र.	फसल	किस्म	बीज की श्रेणी	रकबा (हे.)
1.	अरहर	राजीवलोचन	आधार	13.8
2.	चना	जे.जी. 14	प्रमाणित	58.4
योग				72.2

TSP- अंतर्गत प्रदर्शन

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	चना	जे.जी. 14	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	10	25
योग				10	25

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
पिन-491995
फोन/फैक्स 07741-299124
E-mail: kvkkawardha@yahoo.in

बुक-पोस्ट
भारत शासन सेवार्थ

प्रति,
श्री/श्रीमती/डॉ. .....
.....
.....

उन्नत कृषि
समृद्ध किसान

इंदिरा किसान मितान
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

अंक-28 त्रैमासिक पत्रिका, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर 2017 वर्ष-10

संपादक मंडल

संरक्षक : डॉ. एस.के.पाटिल
कुलपति
इं. गां. कृ. वि. रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक : डॉ. एम.पी.ठाकुर
निदेशक विस्तार सेवाएँ,
इं.गां.कृ.वि.रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणा स्त्रोत : डॉ. अनुपम मिश्रा
निदेशक- ICAR-ATARI
जोन-9 जबलपुर (म.प्र.)

प्रकाशक एवं प्रधान संपादक :
डॉ. बी.पी.त्रिपाठी
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

संपादक : श्री बी.एस.परिहार
सस्य विज्ञान

सह संपादक :
इं.टी.एस.सोनवानी
कृषि अभियांत्रिकी
कु.मनीषा खापर्डे
मात्स्यिकी
श्री वाई.के. कौशिक
कार्यक्रम सहायक

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

संकल्प से सिद्धी सह कृषक सम्मेलन का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा एवं कृषि विभाग द्वारा दिनांक 01.09.2017 को स्थानीय वीरसावरकर भवन में संकल्प से सिद्धी सह कृषक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्यअतिथि के रूप में जिले के प्रभारी मंत्री श्री राजेश मूणत एवं क्षेत्रीय सांसद श्री अभिषेक सिंह एवं विधायक श्री अशोक साहू, जिला पंचायत अध्यक्ष, संतोष पटेल, जिलाधीश श्री नीरज कुमार बंसोड़ के साथ विभिन्न विभागों के अधिकारी कर्मचारी सहित 1500 किसानों ने भाग लिया

समूह फसल प्रदर्शन पर प्रक्षेत्र दिवस

कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा, द्वारा दिनांक 22 सितम्बर 2017 को ग्राम – कारेसरा, विकासखण्ड – स. लोहारा में समूह फसल प्रदर्शन पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। ज्ञात हो कृषि विज्ञान कवर्धा, द्वारा राष्ट्रिय खाद्य सुरक्षा मिशन अन्तर्गत अरहर एवं राष्ट्रिय तिलहन मिशन अन्तर्गत सोयाबीन का समूह फसल प्रदर्शन कार्यकम लिया जा रहा है जिसके तहत ग्राम कारेसरा में प्रदर्शन दिया गया जिसका उद्देश्य दलहन तिलहन फसल का रकबा एवं पैदावार को बढ़ावा देना। प्रक्षेत्र दिवस में सोयाबीन उत्पादन तकनिकी जैसे उन्नत किस्म के बीज, इंदिरा सोया सीडड्रील द्वारा सोयाबीन की बुवाई एवं सम्पूर्ण फसल सुरक्षा की जानकारी किसानो को दी गई एवं अरहर उत्पादन तकनिकी के बारे में किसानों को अवगत कराया गया। प्रक्षेत्र दिवस के अवसर पर ग्राम कारेसरा के 100 से अधिक किसानों ने दलहन एवं तिलहन फसल उत्पादन उन्नत तकनीकी की जानकारी प्राप्त की।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर एवं निदेशक विस्तार सेवायें के मार्गदर्शन एवं निर्देशानुसार कृषि विज्ञान केन्द्र, कबीरधाम, कृषि विज्ञान केन्द, राजनांदगांव एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, बेमेतरा कि वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 25 जुलाई 2017 को जिला कवर्धा के जिला पंचायत सभाकार में सम्पन्न कि गई। इस कार्यकम के मुख्य अतिथि डॉ एस. एस. टूटेजा प्रमुख वैज्ञानिक निदेशक विस्तार सेवायें, इं. गा. कृ. वि. वि. रायपुर उपस्थित हुए। कार्यकम के विशिट अतिथि के रूप में श्री. विशेसर साहू सदस्य कृषक कल्याण परिशद् श्री. कोमल सिंह राजपूत अध्यक्ष बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं अभियान (छ.ग.) डा. आर. के द्विवेदी अधिष्ठाता संत कबीर कृषि महाविद्यालय, कबीरधाम एवं अन्य अधिकारीगण/ कर्मचारी एवं प्रगतिशील कृषक उपस्थित हुए।

OCTOBER TO DECEMBER 2017-18

विगत तीन माह की गतिविधियाँ

निदेशक प्रक्षेत्र, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर एवं प्रबंध प्रबंध संचालक, छ.ग. राज्य बीज प्रमाणीकरण संस्था, रायपुर का भ्रमण

दिनांक 04.09.2017 को डॉ. एस. एस. सेंगर, निदेशक प्रक्षेत्र, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुन ने कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा का भ्रमण किया एवं कार्यो की सराहना की। दिनांक 13.09.2017 को श्री ए. बी. आसना, प्रबंध संचालक, छ.ग. राज्य बीज प्रमाणीकरण संस्था, रायपुर ने कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा को भ्रमण किया। सोयाबीन, अरहर, मूंग फसल का अवलोकन कर पैरी मूंग की सराहना की इनके साथ डॉ. एन. के. रस्तोगी डॉ. दीपक गौराहा एवं श्री एस. के. नाग भी उपस्थित थे।

स्वछता पखवाड़ा मनाया गया

दिनांक 15.09.2017 से 02.10. 2017 तक स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत दिनांक 17.09.2017 को सेवा दिवस कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के अधिकारी एवं कर्मचारी द्वारा मनाया गया। जिसमें स्वच्छता का शपथ लेकर कार्यालय परिसर नेवारी स्कूल, शासकीय भवन जैसे ग्राम पंचायत, आंगनबाड़ी एवं हैण्डपम्प के आसपास साफ–सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिये। इसी तारतम्य दिनांक 25.09.2017 को समग्र स्वच्छता दिवस के अंतर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के अधिकारी कर्मचारी तथा आजीविका महाविद्यालय, कवर्धा के छात्रो द्वारा रैली निकालकर जिले के बालोद्यान, चौपाटी के आस पास साफ–सफाई कर आम नागरिकों को स्वच्छता के विषय मे जागरूक किया।

प्रक्षेत्र परीक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (है.)	लाभार्थी
1.	धान	राजेश्वरी	धान की कतार बोनी में फसल प्रबंधन का आकलन	0.8	04
2.	सोयाबीन	जे.एस.9752	सोयाबीन में खरपतवार प्रबंधन का आकलन	0.8	04
3.	सोयाबीन	जे.एस.9752	रेज्ड बेड प्लान्टर से सोयाबीन की कतार बोवाई का आकलन	0.8	04
4.	धान	राजेश्वरी	धान मे समंवित रोग प्रबंधनका आकलन	0.8	04
5.	धान	राजेश्वरी	धान मे झुलसा रोग के समंवित प्रबंधनका आकलन	0.8	04
6.	सोयाबीन	जे.एस. 97-52	सोयाबीन में खरपतवार प्रबंधन हेतु विडर प्रयोग का आकलन	0.8	04
7.	मछली		नर्सरी तालाब में मत्स्य बीज (जीरा से फ्राई) उत्पादन का आकलन	0.5	04
8.	मछली		नर्सरी तालाब में मत्स्य बीज (फ्राई से अंगुलिका) उत्पादन का आकलन	0.5	04
9.	मछली		जलीय किड़े के विनाश पश्चात् मत्स्य बीज उत्पादन नर्सरी तालाब बीज (जीरा से फ्राई) उत्पादन का आकलन	0.5	04
योग				6.3	36

प्रक्षेत्र मे गन्ना बीज उत्पादन कार्यक्रम

क्र.	फसल	किस्म	बीज की श्रेणी	रकबा (है.)
1.	गन्ना	co- 86032	आधार	0.4
2.	गन्ना	co-94008	आधार	0.4
3.	गन्ना	coc-671	आधार	0.4
4.	गन्ना	co-99004	आधार	0.4
5.	गन्ना	co-85004	आधार	0.4
योग				2.0

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिक का खेतो में भ्रमण	10	60
केन्द्र पर कृषको का भ्रमण	100	100
योग	110	160

बीजोत्पादन कार्यक्रम खरीफ -17

क्र.	फसल	किस्म	बीज की श्रेणी	रकबा (है.)
1.	सोयाबीन	जे.एस. 97-52	प्रजनक	5.0
2.	अरहर	राजीवलोचन	आधार	2.0
3.	मुंग	पैरीमुंग	प्रजनक	1.0
योग				8.0

समूह प्रदर्शन

क्र.	फसल	किस्म	रकबा (है.)	लाभार्थी
1.	अरहर	आशा	60	150
2.	सोयाबीन	जे.एस. 97-52 जे.एस. 95-60	50	125
योग				

सीड हब योजनान्तर्गत बीजोत्पादन कार्यक्रम खरीफ -17

क्र.	फसल	किस्म	बीज की श्रेणी	रकबा (है.)
1.	अरहर	राजीवलोचन	आधार	13.8
योग				13.8

TSP-LTFE अंतर्गत प्रदर्शन

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (है.)	लाभार्थी
1.	सोयाबीन	जे.एस.97-52	दिर्घकालिन उर्वरक परिक्षण	10	25
योग				10	25

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (है.)	लाभार्थी
1.	धान	इंदिरा महेश्वरी	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
2.	धान	इंदिरा महेश्वरी	सिड कम फर्टिलाइजर ड्रिल से कतार बोवाई का प्रदर्शन	5.0	12
3.	सोयाबीन	जे.एस.97-52	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
4.	सोयाबीन	जे.एस.97-52	सिड कम फर्टिलाइजर ड्रिल से कतार बोवाई का प्रदर्शन	5.0	12
5.	धान	राजेश्वरी	धान मे तना छेदक किट के समंवित प्रबंधन का प्रदर्शन	5.0	12
6.	धान	राजेश्वरी	धान मे कण्डवा रोग के समंवित प्रबंधन का प्रदर्शन	5.0	12
7.	मछली		मछली सह बतख पालन का प्रदर्शन	1.0	06
8.	मछली		मिश्रित मछली पालन का प्रदर्शन	1.0	06
9.	मछली		ग्रास कार्प मछली के बढवार का प्रदर्शन	1.0	06
योग				33	90

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	90
2.	पौध संरक्षण	4	1	80
3.	मत्स्यकी	4	1	85
4.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	82
योग		16	4	337

अक्टूबर माह में

फसलोत्पादन एवँ पौध संरक्षण

- गन्ने की शीतकालीन फसल की बुआई करें। रबी दलहनी फसलो के बीजो के बुआई पूर्व
- कवक नाशी थायरम या साफ सुपर (2.5 ग्राम/किलो बीज) से पहले उपचारित करना चाहिए। तत्पश्चात राइजोबियम जिवाणु कल्चर (10 ग्राम) तथा जैविक नियंत्रणकर्ता संरूप ट्राइकोडर्मा (6-10 ग्राम) प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोना चाहिए।
- धान में भूरा माहो के अधिक प्रकोप की अवस्था में इमीडाक्लाप्रिड 17.8 एस.एल.का 125 मि.ली. /है0 की दर से छिड़काव करे अथवा कार्बारिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण का छिड़काव करें। छिड़काव पौधे के निचले हिस्से में केन्द्रित करें।
- पर्णच्छद विगलन (शीध राट) नियंत्रण हेतु प्रोपिकोनाजोल का (1 मि.ली./ली.)छिड़काव करें।
- तिवड़ा की उन्नत प्रजातियां जैसे - प्रतीक, रतन, महातिवड़ा का उपयोग करें।
- मटर की उन्नत प्रजातियां जैसे - अंबिका,शभ्रा, रचना का उपयोग करें।

उद्यानिकी

- टमाटर, मिर्च, बैगन, प्याज एवं गोभीवर्गीय फसलों की नर्सरी लगाए।
- आलू की बुवाई कार्बेन्डाजिम दवा 2.5-3 ग्राम को 1 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 मिनट तक बीजों को उपचारित करें।
- हरी मटर,पालक, मूली, गाजर, धनियां, मेथी आदि की बुवाई करें।
- बर्गीचे की फसल में सिंचाई करें।
- आम, अमरूद, नीबू,कटहल आदि में खाद की शेष मात्रा डालें।
- आम में गुच्छा रोग की रोकथाम के लिए एन.ए.ए. नामक हारमोन का 200 मि.ली./एकड़ की दर से छिड़काव करें।
- शीतकालीन पुष्पों की बुवाई करें।

पशुपालन

- पशुओं को हरे चारे की उपलब्धता आवश्यक होती है इस हेतु रबी मौसम में हरे चारे वाली फसलों जैसे बरसीम, रिजका, सरसों, जई का उत्पादन करें।
- समान्यत: वर्षा ऋतु समाप्त होने पर पशुओं को धान का पैरा ही खिलाया जाता है जिसका पौष्टिक मान कम होता है इस हेतु दुग्ध उत्पादक पशु एवं खेतीहर पशुओं के आहार में पैरा के साथ-साथ हरे चारे एवं खलियां का भी समावेश किया जाना चाहिए।
- पशुओं को खुरपका मुँहपका तथा गलघोंटू बीमारी से बचाव हेतु टीकाकरण जाड़ा शुरु होने से पहले अक्टूबर - नवम्बर तक करवा लेना चाहिए।

नवम्बर माह में

फसलोत्पादन एवँ पौध संरक्षण

- धान के कटाई के उपरांत खेत की संचित नमी के उपयोग हेतु जीरो सीड ड्रिल द्वारा फसलों की बुआई करें।
- धान के कटाई के बाद खेत में संरक्षित नमी में चना, अलसी, मसूर, कुसुम की बुवाई करें।
- चना, मसुर, मटर, सरसों आदि फसलों में नींदा नियंत्रण हेतु बुआई के 3 दिन के अंदर पेन्डीमेथालिन दवा (30 ई.सी.) 750 मि.ली. से 1 लीटर सक्रिय तत्व (दवा की मात्रा 2.5-3 ली.) प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- अंकुरण पश्चात् संकरी पत्ती वाले खरपतवार अधिक होने पर क्युजेलोफॉप इथाइल नामक दवा का 40-50 मि.ली. सक्रिय तत्व (दवा की मात्रा 800 कि.ग्रा.से 1 ली.) प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- गेहूँ की बीजो को कार्बक्सिन+थायरम (2 ग्राम/किलो) बीजो की दर से उपचारित कर बोयें।
- दलहनी फसलों के ऊकठा रोग नियंत्रण हेतु निरोधक प्रजातियों का उपयोग करें।
- खड़ी फसल में सिंचाई करें, गन्ने की कतारों के मध्य अंतरवर्ती फसलें जैसे आलू, प्याज, राजमा आदि की बुवाई करें।
- सिंचित अवस्था में गेहूँ, बरसीम, मटर, सरसों, चना, कुसुम, मसूर, अलसी आदि फसलों की बुवाई करें।

उद्यानिकी

- नर्सरी की पौध में गलन की समस्या की रोकथाम के लिए कार्बेन्डाजिम दवा 2.5-3 ग्राम को 1 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- टमाटर, बैगन,प्याज,आदि की नर्सरी तैयार होने पर उसकी रोपाई करें तथा खाद की अनुशंसित मात्रा का उपयोग करें।
- मटर में पाउडरी मिल्ड्यू की रोकथाम हेतु केराथेन 0. 15 प्रतिशत या सल्फेक्स 0.2 प्रतिषत घोल का छिड़काव करें।
- बगीचें के पौधो के थालों की गुड़ाई करें तथा तने पर बोडों पेस्ट लगाएं।
- आम, लीची, आंवला आदि पौधों में मिलीबम को पेड़ के उपर चढ़ने से राकने के लिए ग्रीस की पट्टी लगाएं।
- आम के वृक्ष में पुष्प कलिका बनना आरंभ हो गया हो तो सिंचाई बन्द रखें। जिससे फुल अधिक आएंगे।
- पुष्पों के पौधों मे सिंचाई करें।

पशुपालन

- लूसर्न व बरसीम चारे की कटाई जमीन से 10 सेमी. छोड़कर 30-35 दिन के अंतराल पर करें तथा सिंचाई करें।
- पशु नस्ल हेतु वर्षा ऋतु के बाद निकृष्ट सांडो एवं बैलों का बधियाकरण किया जाना चाहिए।

दिसम्बर माह में

फसलोत्पादन एवँ पौध संरक्षण

- गेहूँ की बुवाई पूर्ण करें तथा बुवाई के 20-25 दिन बाद (किरीट जड़ अवस्था) सिंचाई करें।
- गेहूँ की विलंब/देरी से बुआई की दशा में बीज की मात्रा से 20-25 किलो प्रति है0 की दर से बढ़ा देवें। देरी से बुआई हेतु गेहूँ की जी. डब्लू 173, लोक - 1, अरपा, विदिशा, एम.पी.4010 आदि किस्मों का चयन करें।
- गन्ने की कटाई कर पिराई करें अथवा गन्ना कारखाने में भेजें।
- चना, मटर एवं मसूर में दाने भरने की अवस्था पर सिंचाई करें।

उद्यानिकी

- मिर्च एवं गोभीवर्गीय फसलों के पौध की रोपाई करें तथा खाद की अनुशंसित मात्रा डालें।
- आलु की फसल में निंदाई गुड़ाई एवं मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें तथा विषाणु जनित रोग के रोकथाम के लिए मिथाइल डेमटान दवा 1 मि. ली./ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- टमाटर के पौधों में बांस के खम्भें एवं तार के माध्यम से सहारा दें।
- आलू में पछेती झुलसा रोग के लक्षण दिखने पर डायथेन एम-45 दवा का छिड़काव करें, दूसरा छिड़काव 15 दिन के बाद करें।
- आलू में कंद भूमि से बाहर आने से हरापन आ जाता है अत: शीघ्र ही मिट्टी चढ़ाकर ढ़क दें।
- खरबूज, तरबूज, लौकी, करेला, ककड़ी एवं कद्दू लगाने खेतों की तैयारी करें तथा पालिथीन की थैली में बीज की बुवाई करें।
- धनिया, मेथी की फसल पर फफूंद से बचाव हेतु 0.3 प्रतिशत सल्फेक्स का छिड़काव करें।
- मिर्च के चुर्रा-मुर्रा रोग की रोकथाम के लिए मिथाइल डेमेटान कीटनाषक (1 मि.ली./लीटर पानी) का छिड़काव 10-15 दिन के अंतराल पर करें।
- शीतकालीन मौसमी पुष्पों में सिंचाई एवं उर्वरक प्रबंधन करें।

पशुपालन

- पशुओं को चराई हेतु प्राय: बाहर भेजा जाता है इस हेतु घास पर सुबह ओस खत्म हो जाने के बाद पशुओं को चराना उचित पाया गया है।
- शीत ऋतु में ठंड बढ़ने पर पशु शालाओं में मोटे परदे की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे रात में ठंड के प्रभाव से पशुओं को बचाया जा सके।
- शीत ऋतु में पशुओं को कभी भी ठंडा चारा, दाना या पानी नही देना चाहिए, क्योंकि इससे पशुओं को ठंड लग जाती है और ठंड का उचित इलाज न होने पर निमोनिया नामक बीमारी हो जाती है।